International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अध्ययनरत छात्रों का आधुनिकीकरण के प्रति अध्ययन

Kalpana Gupta
Research Scholar, Department of Education, Himalayan University
Dr. Poonam Madan
Research Guide, Department of Education, Himalayan University

सारांश
भारतीय समाज के सन्दर्भ में आधुनिकीकरण की अवधारणा विशेष महत्व की है। इसका कारण यह है कि सदियों से भारतीय समाज को एक परंपरावादी समाज के रूप में देखा जाता रहा है। 20वीं सदी के आरम्भ से भारतीय जीवन शैली तथा सामाजिक संस्थाओं में जब पाश्चात्य समाज की विशेषताओं का समावेश होना आरम्भ हुआ, तब यहाँ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ी। दरअसल परंपरागत समाजों में होने वाले परिवर्तनों या औद्योगिकीकरण के कारण समाजों में आए परिवर्तनों को समझने तथा दोनों में भिन्नता प्रकट करने के लिए विद्वानों ने आधुनिकीकरण की अवधारणा को जन्म दिया। एक ओर उन्होंने परंपरागत समाज को रखा और दूसरी ओर आधुनिक समाज को। इस प्रकार उन्होंने परंपरा बनाम आधुनिकता को आधार बनाया। इसके साथ ही जब पाश्चात्य विद्वान उपनिवेशों एवं विकासशील देशों में होने वाले परिवर्तनों की चर्चा करते हैं, तो वे आधुनिकीकरण की अवधारणा का सहारा लेते हैं।

मूल शब्द: अवधारणा, उपनिवेश, आधुनिकीकरण, अवधारणाएँ, परिदृश्य, वैश्वीकरण, पश्चिमीकरण।

प्रस्तावना
परंपरा और आधुनिकता पिछले कई दशकों से समाज विज्ञान विषयों में बहुचर्चित अवधारणाएँ रही हैं। परंपरा का संबंध भूतकाल से है। हमारे पूर्वजों द्वारा बनाए गए रीति-रिवाजों, विश्वासों और कार्य करने के तरीकों, जो हमें विरासत में मिले हैं, वे परंपरा के अंतर्गत आते हैं। परंपरा किसी भी परिवर्तन के प्रति उदासीन होती है, साथ ही परिवर्तन में बाधक भी होती है।
मायरन वीनर के अनुसार आधुनिकीकरण को संभव बनाने वाले प्रमुख साधन इस प्रकार हैं—

1. शिक्षा
2. संचार
3. राष्ट्रीयता पर आधारित विचारधारा
4. चमत्कारी नेतृत्व
5. अवपीड़क सरकारी सत्ता

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

आधुनिकीकरण की विशेषताएँ

समाजशास्त्रियों ने आधुनिकीकरण की विभिन्न विशेषताओं का उल्लेख किया है। डॉ. प्रसाद के अनुसार आधुनिकीकरण की मुख्य तीन विशेषताएँ हैं— **नगरीकरण, साक्षरता तथा सहभागिता।**

लर्नर ने आधुनिकीकरण की सात विशेषताओं का उल्लेख किया है—

1. वैज्ञानिक भावना
2. संचार साधनों में क्रांति
3. नगरीकरण में वृद्धि
4. शिक्षा का प्रसार

महत्व

वर्तमान भारतीय सामाजिक परिदृश्य में आधुनिकीकरण की जो प्रक्रिया चल रही है, उसके फलस्वरूप समाज एवं संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं। इन सांस्कृतिक तत्वों में हो रहे परिवर्तनों को समझने और जानने के लिए इसका अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वर्तमान युग विज्ञान की पराकाष्ठा का युग है। धर्म को विज्ञान की कसौटी पर कसा जा रहा है। धार्मिक मान्यताएँ वैज्ञानिक तथ्यों के सामने क्षीण होती जा रही हैं। सामाजिक परिप्रेक्ष्य हो या धार्मिक परिप्रेक्ष्य, सभी में वैज्ञानिक विचारों का समावेश होता जा रहा है और इसके कारण सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताएँ बहुत तीव्र गति से बदल रही हैं।

अतः युवाओं की वर्तमान संदर्भ में क्या अभिवृत्ति है, इसे जानने की आवश्यकता महसूस हुई।

उद्देश्य

आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, पश्चिमीकरण और उदारीकरण की प्रक्रियाओं ने पहले से परिवर्तनशील भारतीय समाज को और भी अधिक गतिशील बना दिया है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध में स्नातक छात्रों को अध्ययन का केंद्र बनाते हुए आधुनिकीकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. आधुनिकीकरण के प्रति स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आधुनिकीकरण के प्रति विभिन्न वर्गों के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. आधुनिकीकरण के प्रति शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. आधुनिकीकरण के प्रति संयुक्त और एकल परिवार के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

परिणाम

आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या – 1

स्वतंत्र अंश

लिंग	आवृत्ति (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	t मान	सार्थकता
पुरुष	200	132.05	17.73		
महिला	200	141.5	15.93	5.608	सार्थक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल पुरुष स्नातक विद्यार्थियों की संख्या 200 है। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान **132.05** तथा मानक विचलन **17.73** है। इसी प्रकार कुल महिला स्नातक विद्यार्थियों की संख्या भी **200** है। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान **141.5** तथा मानक विचलन **15.93** है। पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों के बीच **t का आंकिक मान 398 स्वतंत्र अंश पर 5.608** है, जबकि **t का सारणीगत मान 0.01 स्तर पर 2.59** है। यहाँ t का आंकिक मान 0.01 स्तर पर t के सारणीगत मान से अधिक है। अतः **शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।** इस प्रकार स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में **सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर** है। इसका अर्थ यह हुआ कि आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति अलग-अलग है।

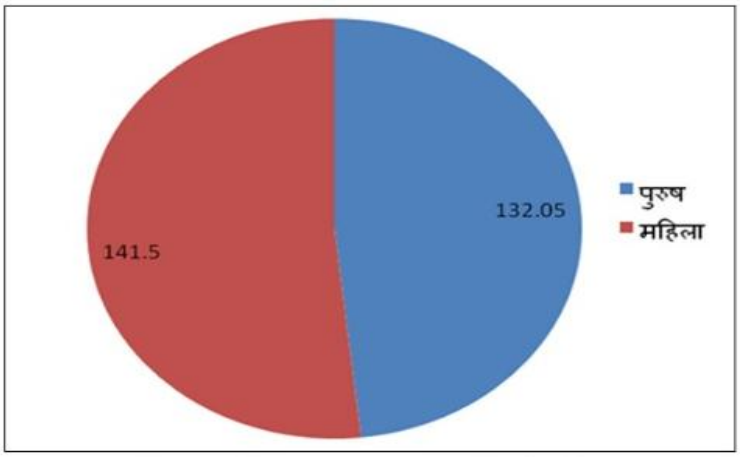

चित्र – 1 **परिकल्पना मध्यमान प्राप्तांक रेखाचित्र**

आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कुल पुरुष स्नातक विद्यार्थियों की संख्या **200** है। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान **132.05** है। इसी प्रकार कुल महिला स्नातक विद्यार्थियों की संख्या **200** है। इनमें आधुनिकीकरण पर प्राप्त

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

प्राप्तांकों का मध्यमान **141.5** है। पुरुष और महिला स्नातक विद्यार्थियों के बीच **t का आंकिक मान 398 स्वतंत्र अंश पर 5.608** है, जबकि **t का सारणीगत मान 0.01 स्तर पर 2.59** है।

सुझाव

समयाभाव की परिस्थितियों के कारण इस अध्ययन में शोधकर्ताओं द्वारा कुछ वर्ग व तथ्य छूट गए हैं। अतः भावी अनुसंधानकर्ताओं को निम्न सुझाव दिए जा रहे हैं—

1. आधुनिकीकरण के उपक्षेत्रों (सामाजिक-धार्मिक, विवाह, स्त्री की स्थिति व शिक्षा) के प्रति विवाहित एवं अविवाहित स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन भी किया जा सकता है।
2. यह अध्ययन केवल देहरादून शहर के स्नातक विद्यार्थियों पर किया गया है, जबकि इसी प्रकार का अध्ययन अन्य प्रदेशों, अन्य शहरों एवं क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।
3. यह अध्ययन स्नातक विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य विषयों में पढ़ने वाले स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
4. आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति को अन्य चर के साथ मिलाकर भी अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Srinivas, M. N., Social Change in Modern India, California Press, Los Angeles, 1966, p. 50.
2. Srinivas, M. N., Ibid, p. 52.
3. Weiner, Myron, Modernization: The Dynamics of Growth, Higginbothams Ltd., Madras, 1967, p. 33.
4. अंगिरा, के.के., A Study of Values in Relation to Locality and Gender, Indian Psychological Review, 44, 1995, pp. 10–14.
5. अमर, एस. तथा आर. यूट्ज़, Formal Education and Individual Modernity in an African Society, American Journal of Sociology, January 1971, pp. 604–626.
6. आहूजा राम, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली, 1995, pp. 378–379.
7. आहूजा राम, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली, 1995, p. 365.